प्रश्न → भक्ति काल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है? सविस्तार विवेचन कीजिये?

उत्तर → भक्ति काल जिसकी अवधि वि० सं० 1375 - 1700 तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में जब हम भक्ति काल की तुलना विभिन्न कालों से करते हैं तो हम इस महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर आते हैं कि भक्ति काल सर्वश्रेष्ठ हो जाता है। सर्वश्रेष्ठता के कारण ही यह काल हिन्दी का 'स्वर्णयुग' माना जाता है। विभिन्न कालों की तुलना से इस काल की सरसता प्रमाणित होती है।

भक्ति काल की प्रथम विशेषता है कि इस काल के कवियों ने किसी दबाव या लालच में पड़कर काव्य रचना नहीं की। वीरगाथा काल तथा रीति काल के कवियों की तरह इन की कविता राजाश्रय में पल्लवित एवं पुष्पित नहीं हुई। वे अपने आश्रयदाताओं के मनोरंजनार्थ काव्य रचना किया करते थे। इसके विपरीत भक्तिकालीन भक्त कवियों को राजाश्रय की चिन्ता नहीं रहती थी। सच्चाई यह है कि भक्तिकालीन कविता आत्म जागरण का परिणाम है। वह स्वामिनः सुखाय नहीं बल्कि स्वान्तः सुखाय है। भक्ति कवि को प्राकृत जन का गुणगान नहीं करना था। कुंभनदास का यह कथन "सन्तन को कहा सीकरी सों काम" इस काल के कवियों के चिन्तन गौरव, आत्म गौरव तथा स्वाभिमान का अच्छा प्रमाण है। इनका काव्य प्रभावों से अलग निश्छल आत्माभिव्यक्ति है जिसमें सत्य, उल्लास, आनन्द एवं युग निर्माणकारी प्रेरणा है, उनके काव्य में हृदय की सच्ची अनुभूति है। अनुभूतिगत ईमानदारी के कारण ही भक्ति काल इतना प्रभावशाली बन सका। अंग्रेजी के प्रसिद्ध आलोचक हडसन ने कहा है —

"Without seincerity no wital worse in literature is Rosebble."

भक्ति काल की महत्वपूर्ण विशेषता है कि ~~इसको~~ इसने पतन की कगार की घड़ी में देश और समाज को रसातल में जाने से उबार लिया। सांस्कृतिक पराभव का युग था, तमाम सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक परिस्थिति बड़ी ही भयावह थी।

Scanned with CamScanner

(2) समाज में निष्क्रियता आ गई जड़ता आती जा रही थी। ऊँच नीच के भेदभाव का विष वायुमंडल में फैलता जा रहा था। जाति पाँति के बंधनों एवं पारस्परिक वैमनस्य का साम्राज्य बढ़ रहा था। धर्म के नाम पर आडम्बर गतिशील हो रहा था। देवी देवताओं के प्रति पूज्य भाव घट रहा था। विधर्मी आक्रमणकारी मुसलमान शासकों का अत्याचार बढ़ता जा रहा। साहित्य में शृंगार रस की धारा बही जा रही थी। ऐसी विषम परिस्थिति में देश और समाज की रक्षा करने वाला यह साहित्य निश्चय ही अत्यंत उच्च कोटि का माना जाना चाहिये। जायसी, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान आदि कवियों ने ईश्वर की भक्ति से लोक का उद्धार किया॥

भक्ति काव्य चिरस्मरणीय एवं शाश्वत काव्य है। सूर और तुलसी का काव्य साधारण काव्य नहीं है। वे हमारे साहित्य के गौरव ग्रंथ हैं। उनकी कृतियों में आत्मा की सहज स्फूर्ति एवं भावों का स्पंदन है। उसमें भावपक्ष एवं कलापक्ष का मणि कांचन संयोग हुआ है। मानव प्रकृति के सुन्दर चित्र इनकी रचनाओं में सहज सुलभ हैं वे अन्यत्र दुर्लभ हैं।
काव्यशास्त्र की दृष्टि से इस काल की रचनाओं में उच्च कोटि के काव्य के दर्शन होते हैं। भावपक्ष कलापक्ष के क्षेत्र में वीरगाथा काल एवं रीतिकाल बहुत पीछे छूट जाते हैं। वीर गाथा की रचनाओं की स्थिति विचित्र है। एक ओर प्रामाणिकता तथा दूसरी ओर काव्यत्व की अनिश्चितता के द्वन्द्व पर झूल रहा है जो संदिग्ध एवं अप्रामाणिक हैं। उनमें काव्य प्रक्षिप्त हो रहे हैं और जो असंदिग्ध एवं अप्रामाणिक हैं उनमें काव्य रस का सूखापन दृष्टिगत होता है। यदि कुछ अंशों तक उन्हें प्रामाणिक मान भी लिया जाए तो उनमें भक्तिकाल की रचनाओं की प्रतिद्वंद्विता करने का सामर्थ्य नहीं है। रीतिकालीन काव्य का भावपक्ष भक्तिकालीन कवियों की तुलना में बहुत ही न्यून है। रीतिकालीन कवियों में अलंकरण एवं प्रदर्शन की प्रवृत्तियों का प्राधान्य है। सीमित परिधि में नायिका भेद

Scanned with CamScanner

③ की रूढ़ियों तथा आलंकारिक चमत्कार, रीतिबद्ध कवि का उद्देश्य बन गया था। इसमें वह व्यापकता नहीं जो भक्तिकाल में दृष्टिगत होती है।

भक्तिकाल के द्वारा भारतीय संस्कृति और आचार विचार की पूर्ण रक्षा सम्भव हुई है। इसमें संदेह नहीं कि भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, सभ्यता, आचार विचार, व्यवहार आदि सभी कुछ भक्ति काव्य में सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित (क्रमबद्ध) सुरक्षित है। भक्ति काव्य मध्यकालीन हिन्दू संस्कृति का दर्पण है। अपनी सीमाओं के बावजूद आधुनिक भारतीय धर्म एवं संस्कृति के निर्माण का श्रेय तुलसी को है और भारत में 'रामचरितमानस' को उतनी लोकप्रियता प्राप्त है जितनी यूरोप में 'बाइबल' को। हिन्दू जाति को विश्वास हो गया कि उनके भगवान रावण और कंस जैसे आततायी अत्याचारियों का विनाश सरलता से कर सकते हैं। अतः भक्ति काव्य हिन्दू के अटूट आस्था का काव्य है।

भक्तिकाल का काव्य लोक एवं परलोक दोनों को सुधारता है। आध्यात्मिक पक्ष को लेकर अग्रसर होते हुए यह कवि जीवन और जगत से सम्बन्ध बनाए रखते हैं। साहित्य का सम्बन्ध जीवन से है। जीवन की सार्थकता केवल सिद्ध नहीं होती, परिवेश की प्रासंगिकता में भी अवस्थित होता है। सामाजिक जीवन विषमताओं का पुंज होता है। समता लाने के लिए निरंतर प्रयत्न करना पड़ता है और समता लाने के लिए प्रयत्नों को भी सामाजिक जीवन की अवस्था एवं अपेक्षा के अनुसार कभी मधुर कभी कठोर बनाना पड़ता है। कबीर ने हिन्दू मुस्लिम विरोध जातिपाँति और छुआछूत आदि का विरोध किया। वास्तव में आज के संदर्भ में कविता ने जो नया मोड़ लिया उसके नाते कबीर की आधुनिक कविताएँ हमारे लिए अत्यधिक प्रासंगिक हो उठी हैं। जायसी ने अपनी कहानियों को आध्यात्मिक रंग देकर लोक जीवन से सम्बद्ध किया। सूर ने बाल क्रीड़ाओं के सौन्दर्य और मधुर भावों का वर्णन कर मानव जीवन को अत्यंत सरस बना दिया। इस पृथ्वी पर स्वर्ग उतार दिया। तुलसी का ~~आदर्श~~ महत्त्व तो और महान है। उनकी देन अमूल्य है। वे कभी भी नहीं उपेक्षणीय

[illegible] अनुसार [illegible]

नहीं लोक मंगल अनुरक्त भी हैं।

भक्ति काल के कवियों की एक महत्वपूर्ण देन उनके आदर्श चरित्रों की देन है। वीर गाथा काल और रीति कवियों ने हीन नीति एवं राजाओं के एवं चित्रित किये भी काव्य के कल्पित पुरुष रहे। उनकी रचनाएँ अतिशयोक्ति पूर्ण हैं।

रीतिकाल के कवियों ने राधा एवं कृष्ण को आराध्य लोक से भौतिक लोक में पहुँचा दिया है। कामदेव की केलि क्रीड़ा का नग्न चित्र प्रस्तुत किया है। जन जीवन नारी के सौंदर्य के शरीर में ही उलझ कर रह गया। भक्तिकाल का योग समाप्त हो गया। उसके स्थान पर संयोग आ गया। तुलसी राम सीता भरत हनुमान आदि हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के सांकेत हैं उनका जीवन हमारा जीवन आदर्श हैं इनके चरण चिह्न हमारे पथगामी हैं।

हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम भक्तिकाल में ही गीतों का बीजारोपण हुआ। वीरगाथा काल में संगीत लक्ष्य नहीं है। रीति काल में भी संगीत नहीं है। गीतिकाव्य के लिये आत्मविश्वास तीव्रानुभूति एवं संक्षिप्तता आदि की आवश्यकता होती है, रीति काल के कवियों में ऐसा किसी भाव संपत्ति का अभाव है। सूर तुलसी कबीर मीरा नानक आदि के पदों में प्रेम सौंदर्य और संगीत की त्रिवेणी प्रवाहित होती है।

भक्तिकाल अपनी भाषा एवं रचना शैली के लिए भी गौरव पूर्ण है। ब्रजभाषा एवं अवधी इस काल की दो प्रमुख भाषाएँ हैं। तुलसीदास ने संस्कृत का पुट देकर बोलचाल की अवधि भाषा को परिष्कृत किया और काव्योपयोगी बनाया। रीति काल में ब्रजभाषा के साथ अवधी बुन्देलखण्ड आदि को मिश्रित किया गया। शब्दों की काला बाजारी की गई। अतः भाषा का रूप विकृत हुआ। भक्ति काल ने प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार की सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ दी।

अतः भक्तिकाल निश्चय ही हिन्दी साहित्य के वीर गाथाकाल और रीति काल से मात्रा एवं गुणा दोनों में बढ़कर है।

आधुनिक काल एवं भक्ति की तुलना की जा सकती है। आधुनिक काल में गद्य का विकास बहुमुखी हुआ। नाटक, निबन्ध, कहानी, उपन्यास

Scanned with CamScanner

(5) हिन्दी आलोचना के नए आयाम सृजन गये। भक्ति की विचारों की दृष्टि से आधुनिक युग भावित काल से है। 'रामचरित मानस' और 'सूरसागर' जैसे सुयोग्य ग्रन्थ आधुनिक काल अभी भी तक के ही में नहीं आ सका है।

अतः हम डॉ० श्यामसुन्दर दास से पूर्णतः सहमत हैं "जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर जैसे रससिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकरणों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यतः भक्ति युग कहते हैं। वह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है।"

"सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास
आज के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहिं प्रकास।"

भक्ति काल में हिन्दी साहित्य के दो अमर कलाकार पैदा हुए - एक 'सूर' और दूसरे तुलसी। दोनों महान हैं। दोनों की रचनाएँ हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ हैं पर तुलना की दृष्टि से तुलसी का व्यक्तित्व महत्तर जाता है। सूर ने केवल पद लिखे हैं। तुलसीदास ने प्रबन्ध काव्य (रामचरित मानस) भी लिखा है, इस प्रकार, सूरदास में जहाँ केवल गीति-प्रतिभा का परिचय मिलता है वहाँ तुलसीदास में गीति और प्रबंध दोनों की प्रतिभा मिलती है। फिर सूरदास में कृष्ण के केवल बाल और किशोर रूपों का चित्रण किया है उनके समग्र जीवन का नहीं। अतः उनकी ~~मानव~~ काव्य समस्त जीवन व्यापिनी काव्य नहीं है। तुलसीदास ने राम के जीवन में सम्पूर्ण मानव जीवन प्रस्तुत किया है। उनकी भावुकता जीवन का कोना कोना झाँक आयी है। उनके मानस में जीवन का कोई पक्ष मानव के चरित्र का कोई पहलू अछूता नहीं रहा है। श्रेष्ठ कवि के तीन गुण होते हैं जीवन के मर्मस्थलों की पहचान, उनके अनुरूप अनुभूति और मार्मिक अभिव्यक्ति। ये तीनों गुण महाकवि तुलसीदास में जिस प्रचुर रूप में मिलते हैं अन्यत्र नहीं।

सूरदास के पक्षधर कहते हैं कि सूर हिन्दी के उन कवियों में हैं जिनके गीत महाकाव्य बन गए हैं। हिन्दी में विरह और वात्सल्य

साहित्य के अद्वितीय विभूति सूरदास हैं।

साहित्य के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठता की कसौटी रचनाकार नहीं व्यापक विशिष्ट है। अतः सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कवि हैं।

उनका सूरसागर सबसे सार है। उनकी भावुकता, प्रेम ~~[illegible]~~ अनन्यता, विरह वेदना, अनुभूति की सच्चाई एवं अपार भाव व्यंजना उन्हें हिन्दी कवि की कोटि में परिगणित करती हैं। प्रसिद्ध आलोचक उडवर्थ ने कहा था — "Without sincerity no vital work in literature is possible."

सूर के पास अनुभूति की सच्चाई भावात्मक विदग्धता है साथ यौवन मनोविज्ञान की अद्भुत क्षमता भी है यदि उनके पास नहीं है तो भौतिक आँखें जिनके अभाव में भी वे जीवन का कोना-कोना झाँक आये हों।

प्रस्तुत उक्ति के संदर्भ में यह मानना पड़ेगा कि उक्ति रचयिता में हिन्दी काव्य परम्परा को चरम तक ~~शक्ति~~ क्षमता थी।

भक्तिकाल

- निर्गुणधारा
- सगुणधारा

निर्गुणधारा

ज्ञानाश्रयी शाखा

1. कबीर (बीजक: रमैनी, सबद, साखी)
2. रैदास (आदि गुरु ग्रन्थ साहिब)
3. धर्मदास
4. गुरु नानक
5. दादू दयाल
6. सुन्दरदास
7. मलूकदास
8. अक्षर अनन्य

प्रेमाश्रयी शाखा

1. कुतुबन - मृगावती सूफी
2. मंझन - मधुमालती
3. मलिक मुहम्मद जायसी - पद्मावत, अखरावट
4. उसमान - चित्रावली आखिरी कलाम
5. शेख नबी
6. कासिम शाह
7. नूर मुहम्मद

सगुणधारा

रामभक्ति शाखा (रामानन्द)

ध्रुवदास
नाभा
रसखान
हितहरिवंश
गदाधर भट्ट
मीराबाई
स्वामी हरिदास
सूरदास